वेदों में रथ विज्ञान तथा वाहन विज्ञान

वेदों के अन्दर 'रथ' नाम से अनेक वाहनों का वर्णन किया गया है। यह वाहन वायु, स्थल, जल सभी जगह चलने वाले वाहनों के लिए "रथ" नाम से उल्लेखित है। सायणाचार्य, महर्षिदयानन्द आदि विद्वानों ने वेदों का भाष्य किया था। उस समय तक वायुयान आदि विद्याओं का संसार में प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। यहां परमरथ नाम से जो वेदों मे वाहनों का उल्लेख आया है। इसकी एक तालिकाओं को देखकर इन विद्याओं का कितना विस्तार हो सकता है, जाना जा सकता है। तालिका इस तरह से है (ऋ. १/६/१)

युज्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षता रथें। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।

इस मंत्र के वर्ग में विद्युत एवं वायु विज्ञान के यंत्र बनाकर गर्म आकर्षण और वेदा आदि शिल्पक्रिया द्वारा तरह-तरह के यंत्र बनाकर मनुष्यों को देश - देशान्तर पहुँचाने का वर्णन किया गया है। इस वर्ग में किरण और प्रकाश और पेश नाम से स्वर्ण द्वारा निर्मित वाहनों का भी उल्लेख किया गया है। यह प्रसंग अथर्ववेद २०/२६/५, २०/४१/२१, २०/६९/१० में भी वर्णित किया गया है।

इन तीनों जगहों पर ही यही मंत्र आया हुआ है। यजुर्वेद २३/५ से १२ वाले अन्तुवाक में इस विद्या का विस्तार किया गया है। त्रेत्रिय संहिता १/४/२०/१ द्वारा वेदों के अन्य स्थलों को भी जोडता है।

ऋ १/९/८ वाले मंत्र में भी विद्युत विज्ञान द्वारा सेनाओं मे काम आनेवाले रथों का वर्णन किया गया है।

अस्मे घेंहि श्रवों बृहद द्युम्नं सहस्त्रसातमम्।
इन्द्र ता रथनीरिषः।।८।।

इस वर्ग में भी विद्युत रूप में इन्द्र की उपासना करते हुए उसके द्वारा प्राप्त होने वाले गुण कर्मों में रथ वाहनों में भरा हुआ अन्न एवं घन से भरे हुए रथों का उल्लेख है। जो विद्युत विज्ञान द्वारा चलाये जा सकते हैं।

इन्द्रं विश्वा अवीवृघन्त्समुद्रव्यचसं गिरः।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिम्पतिम्।।६।।

ऋ १/११/१ से ८ वाले वर्ग में युद्ध विमान में काम आने वाले आकाश एवं समुद्र में चलने वाले रथ वाहनो का उल्लेख है।

अग्ने सुखतमे रथे देवा ईण्डित आ वह। असि होता मनुर्हितः।।४।।

ऋ १/१३/४ वाले वर्ग में इडित अग्नि के द्वारा गमन और बिहार कराने वाले विमान आदि सवारियों में मेघा तिथि कण्व ऋषि सिद्धान्त द्वारा रथ वाहन का उल्लेख किया गया है।

युश्वा हारूपी रथे हरितो देव रोहितः । ताभिर्देवाँ इहा वह।।१२।।

ऋ १/१४/१ से १२ वाले वर्ग में विश्वेदेवा देवता (ज्ञान विभाजक विद्वानों) के द्वारा रथ नामक पृथ्वी, समुद्र, अन्तरिक्ष नीची, उँची जगह चढ़ाने उतारने वाले विमानों में रोहित नामक अश्व शक्ति को जोड़ने का विधान किया गया है।

इमा धाना धृतस्नुको हरी इहोप वक्षतः। इन्द्रं,सुखतमे रथे।।२।।

काण्डवो मेघातिथि ऋषि सिद्धान्त द्वारा ऋ १/१६/१ से ५ वाले वर्ग में विद्युत विज्ञान द्वारा रथ नामक विमान आदि में हरी नामक ठन्डे - गर्म (कृष्ण और शुक्ल पक्ष) द्वारा विमान आदि रथ वाहनों का उल्लेख है।

तक्षन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम्। तक्षन धेनुं सवर्दुवाम्।।३।।

ऋ १/२०/१ से ५ वाले वर्ग मे इभवों देवता (विज्ञान) में अग्नि और जल से सब जगह आनेवाले रथ विमानों का उल्लेख किया गया है। इस वर्ग में विमान आदि वाहनों को बनाने वाले शिल्प क्रिया के मूल सिद्धान्तों का वर्णन है। तथा विद्युत एवं किरण विज्ञान का भी नाम आया है।

" या सुरथा रथीत मोभा देवा दिविस्पृशा। अश्विना ता हवामहे।।२।।

ऋ १/२२/१ से ५ वाले वर्ग में अश्विनी विज्ञान में अग्नि जल द्वारा रथयान वाहनों में शिल्प विद्या कला यंत्रो को बनाने का निर्देश दिया गया है।

इस वर्ग के मंत्रों में शिल्प विद्या से सिद्ध होने वाले यंत्र कलाओं में बल देनेवाले अग्नि और जल को कार्य में लाने के लिए मनुष्यों को मेघातिथि ऋषि ने (वैज्ञानिक) ने निर्देश दिये हैं। तथा पाँचवे मंत्र में इस विद्या में स्वर्ण का प्रयोग करने का निर्देश है। इससे यही लगता है कि हमारे पूर्वजों को धातु विज्ञान का पूर्ण ज्ञान था। यह प्रकरण यजुर्वेद ९ वे अध्याय के ग्यारहवें मंत्र तथा पाँचवें अनुवाक में भी दिया गया है एवं त्रैत्रिय संहिता १/४/६/१ तथा १/१ के मंत्रों द्वारा इस विद्या को वेद के अन्य स्थलों से भी जोड़ता है। एत्रेय ब्राह्मण २३/४/११२ में भी इस प्रसंग के लिए कुछ निर्देश दिया गया है। इस मंत्र का देवता अश्विनों (अग्नि जल भाप विज्ञान)

वच्यन्ते वां ककुहासों जर्णायामधि विष्टपि। यघ्दां रथोथिभिष्यतान्।।३।।

ऋ १/४६/३ वाले मंत्र में अश्विनो विज्ञान में ही कारीगरों को अंतरिक्ष में विमानों को चलाने वाली विद्याओं को चलाने का उपदेश देने के लिए निर्देश दिया गया है। इस प्रसंग को सामवेद पूर्वाचिक मंत्र संख्या ११८ "एषो उषा अपूर्व्या ...." वाले मंत्र का भी विस्तार भी है। सामवेद पूर्वाचिक के द्वितीय अध्याय के सातवीं दसती के दस मंत्रों द्वारा ऋग्वेद के अन्य स्थलों से १०/१५३/१, १०/१३४/१, १/४६/१, १/८४/१३, १/९/१, ४/३२/१, ८/६/५, १/३०/४, १०/१८६/१, वाले मंत्र के वर्गो से जोड़ता है। जिससे वह पूर्णतः प्रमाणित हो जाता है कि वेद एक संसार की अपूर्वतम वैज्ञानिक ऋषि है। जो हमारी प्राचीनतम महानता का ज्ञान कराती है। वेदों में विमानों के इतने अधिक किस्मों का वर्णन है जिनका परिचय रामायण और महाभारत से भी नहीं हो पाता है। इससे यही प्रमाणित होता है कि रामायण और महाभारत काल में भी वेदों को समझने वाले पूर्णतः उपलब्ध नहीं थे।

"त्रिबन्धुरेण लिवृतां सुपेशसा रथना यातमश्विना।
कण्वासो वां बह्न कृण्वन्त्यध्वरेतेषां सु शुणुतं हवम्।।२।।

ऋ १/४१/३: इस मंत्र में इन रथ विमानों को त्रिबन्धुरेण अथवा आजकल के वाहनों में जो गेदर व्यवस्था तथा अंतरिक्ष में तिवृत्त को पार करने के लिए (अन्तरिक्ष, पृथ्वी तथा दूसरे ग्रहों की कक्षाओं में पास करने के लिए स्वर्ण जडित यानों को कार्य में लाने का निर्देश दिया गया है। इससे अगले वर्ग में किरणों द्वारा कार्य में लाने का निर्देश दिया गया है।

यन्ना सत्या परावति यद्धा स्थो अधि तुर्वशे।
अतो रथेन सुवृत्ता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः।।१।।

ऋ १/४९/७ ऋ- १/५०/१ से २३ वाले सूक्त के तीन वर्गों में सूर्य किरणों को रथ विमानों में कार्य में लेने के लिए तरह-तरह के किरण सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है।

इस तरह से हमारे यहां के वेद विद्वान पुरानी परपाटियों से उठकर वेद विद्याओं को ढूंढने का जरा भी प्रयास नहीं कर रहे हैं। अगर वह अपनी पूर्व घटनाओं को त्याग कर निष्काम और निष्कपट भाव से वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करें तो संसार में वैदिक ग्रन्थों को पढ़ने की अपूर्व जिज्ञासा उत्पन्न होकर विज्ञान की जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान वेद से प्राप्त होकर मनुष्य जाति अत्याधिक उन्नत हो सकेगी।

श्री. छैलबिहारीलाल गोयल